International Journal of Advanced Research in Engineering Technology & Science ISSN: 2349-2819
Email: editor@ijarets.org Volume-7 Issue-12 December-2020 www.ijarets.org

पर्यावरण संरक्षण – भारतीय परिपेक्ष में

डा. आभा माथुर
राजकीय महाविद्यालय, मालपुरा

प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी में पदार्पण के साथ जहाँ मानव जाति एक तरफ औद्योगिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति के शिखर पर पहुंच गई है. वही दूसरी ओर उसके समक्ष त्वरित औद्योगिक उत्पादन, अत्यधिक ऊर्जा उपयोग और जनसंख्या विस्फोट के कारण पर्यावरण प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधन के ह्रास की विकट समस्याएँ पैदा हो गई हैं।

इस विनाश की आंशका ने सतत (टिकाऊ या अक्षुण) विकास को अवधारणा को जन्म दिया है। सतत विकास को इस तरह परिभाषित किया जा सकता है कि वह विकास जो भविष्य में जाने वाली पीढियों की आवश्यकता पूर्ति को कम किये बिना वर्तमान पीढी की आवश्यकता को पूरी कर सकें।

भारत में सतत विकास की अवधारणा वैदिक काल से

पश्चिमी देश सतत विकास की अवधारणा को एक नवीन अवधारणा के रूप में पेश करते हैं, जबकि भारतीय चिन्तन में वह अवधारणा वैदिक काल से है। अथर्ववेद के श्लोक 12/01/35 का कथन है, "हम पृथ्वी से जो खोद कर निकालें, वह शीघ्र दुबारा उग आए। हम पृथ्वी के ह्रदय और मर्म–स्थलों को क्षति न पहुंचाए"।

उक्त सतत विकास की अवधारणा का आधार भारतीय संस्कृति में प्रकृति को परमात्मा का रूप या अभिव्यक्ति माना जाता है। आज की पाश्चात्य संस्कृति प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का लक्ष्य रखती है, जबकि भारतीय संस्कृति में प्रकृति से सामनजस्य स्थापित करने का भाव रहा है। प्रकृति को जीवन पालक की संज्ञा दी गई है और इसी कारण पर्यावरण संरक्षण भारतीय जीवन शैली का अभिन्न अंग है।

भारतीय शास्त्रों में प्राकृतिक संसाधनों की महत्ता

भारतीय शास्त्रों में सूर्य, पृथ्वी, वायु, आदि को देवत्व की श्रेणी में रख कर पूज्य माना गया है। जल और वायु को शुद्ध स्थिति में रखने पर शास्त्रों में अनेक श्लोक आदि हैं। वनस्पति और वृक्षों को भी पूज्य माना गया है। पीपल, बड़ और तुलसी की पूजा और धार्मिक अनुष्ठानों में केले के पत्तों का उपयोग, आयुर्वेद की मान्यता कि कोई वनस्पति ऐसी नहीं जिसका औषधि के रूप में उपयोग न हो सके, इसके उदाहरण हैं।

भारतीय संस्कृति के सिद्धान्त–पर्यावरण हितैषी

भारत्तीय संस्कृति के कुछ सिद्धान्त पर्यावरण संरक्षण को जीवन शैली का अंग बनाते हैं। इनमें अंहिसा और अपरिग्रह महत्वपूर्ण हैं। अंहिसा का सिद्धान्त सभी सजीव एवं निर्जीव पर लागू होता है। वनस्पति, पशु, पक्षी को नुकसान पहुंचाना, प्राकृतिक संसाधनों और जैव विविधता को नाश करना भी हिंसा है।

अपरिग्रह का तात्पर्य है उपभोक्ता वस्तुओं एवं सेवाओं का परिमाण लालच के अनुसार नहीं, बल्कि आवश्यकता की सीमा तक ही स्वीकार किया जाय। सेवाओं और चीजों का अत्यधिक उपयोग तथा संसाधनों का अतिशय दोहन मानव जाति को विनाश के रास्ते ले जाएगा। आज अमेरिका जिसकी आबादी विश्व की आबादी की 5 प्रतिशत ही है, विश्व के 30 प्रतिशत संसाधनों का उपयोग कर रहा है।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण के प्रयोग

1. **ओरण** : ओरण व्यवस्था में गाँव के सब लोग मिल कर एक स्थान को मरुध्यान (नखलिस्तान) की तरह विकसित कर उसमे जैव विविधता के पौधे, वृष आदि लगाते थे। इस क्षेत्र ने शिकार करना, जानवर चराना, वनस्पति को नुकसान पहुँचाना वर्जित था। सब गाँव वाले, औरण की रक्षा की प्रतिक्षा लेते थे। पर्यावरण संरक्षण का इससे बडिया उदाहरण नहीं मिल सकता।

2. **खडीन**: खेत की जमीन में दलान पर एक मिट्टी का जच्या बांध, 60 से 90 सेंमी ऊबा बना कर संचित पानी से फसल लेने की प्रणाली खडीन, जैसलमेर क्षेत्र में 15वीं सताब्दी में विकसित हुई। वर्तमान काल में इस प्रणाली में सुधार करके और उपयोगी बनाया जा सकता है।

भारतीय परिपेक्ष में पर्यावरण संरक्षण हेतु कुछ सुझाव

1. पर्यावरण संरक्षण में जन भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। इस हेतु ग्राम पंचायतों द्वारा जागरुकता अभियान चला कर ग्राम वासियों को शिक्षित कर उचित मार्न दर्शन देना चाहिये।

2. आजकल विभिन्न कक्षाओं में पर्यावरण विज्ञान पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इसमें भारतीय पृष्ठ भूमि को सन्मिलित करके यह सन्देश देना चाहिये कि पर्यावरण संरक्षण हमारे संस्कारों में निहित है और पर्यावरण प्रदूषण करना पाप की संज्ञा में आता है।

3. प्राचीन ओरण प्रथा को नये सिरे से पुनर्जीवित करना चाहिये। पुराने ओरणों की गणना और रख रखाव पर उचित ध्यान देना चाहिये।

4. परम्परागत जल संचयन के तरीकों पर शोध द्वारा सुधार और पुरानी बावड़ियों और तालाबों के रख रखाव की आवश्यकता है। जल संचयन के नये तरीकों (Water Harvesting) और जल के पुर्नउपयोग को बढ़ावा देना चाहिये।

5. आज पर्यावरण प्रदूषण की मुख्य समस्या पृथ्वी का गर्म होना (Global Warming) है। इसका मुख्य कारण जीवाश्म इंधनों का अधिकाधिक उपयोग है। इसे कम करने के लिये सौर्य ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल ऊर्जा आदि का अधिक उपयोग होना चाहिये। गाँवों में उन्नत चूल्हा, सौर्य चूल्हा के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिये।

6. एक बडा ऊर्जा संसाधन मानव मल (पखाना) है। हर गाँव में इस पर आधारित बायोगैस संयंत्र लगाने चाहिये, जिससे केरोसिन और बिजली के उपयोग में कमी आये।

7. ऊर्जा का उपयोग कम करने के लिये मकान बनाने में सीमेंट, लोहा, काँच, एल्यूमिनियम आदि का उपयोग कम हो, पत्वर, ईंट, गारे (मिट्टी) का उपयोग अधिक हो। मकानों का डिज़ाइन इस प्रकार का हो कि वे प्राकृतिक रूप से गरमी में ठण्डे और सर्दी में गरम रहे, बिना ऊर्जा का उपयोग किये।

8. सबसे महत्वपूर्ण है **'सादा जीवन उच्च विचार'** का सिद्धान्त। गांधी जी के कथन के अनुसार प्रकृति हमारी आवश्यकताओं को पूरी कर सकती है. हमारे लालच को नहीं।